# दूल्हा बन आए त्रिपुरारी रे

धुन - पुरवा सुहानी आई रे

दूल्हा बन आए, त्रिपुरारी रे,,, त्रिपुरारी ॥
*हो के बैल पे सवार, पहनें सर्पों के हार ॥,,
लागे सुंदर छवि प्यारी रे,,, त्रिपुरारी,
दूल्हा बन आए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

गंगा को प्रभु जी, शीश पे धारे,
कानों में सर्पों के, कुण्डल डारे ॥
*सर्पों की माला है, कण्ठ में डाला है ॥,,
श्री चंद्र धारी रे,,, त्रिपुरारी,
दूल्हा बन आए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मरघट की राख़ को, अंग रमाए,
कंठ पे काले काले, नाग लहराए ॥
*मस्तक विशाला है, त्रिनेत्र वाला है ॥,,
त्रिशूल धारी रे,,, त्रिपुरारी,
दूल्हा बन आए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

भंग धतूरे को, खाने वाला,
सब देवों में, देव निराला ॥
सर्प और ततैईया है, बिच्छू बरैईया है ॥,,
बाग्मबर धारी रे,,, त्रिपुरारी,
दूल्हा बन आए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

ब्रह्मा विष्णु, देव बाराती,
भूत प्रेत सब, संगी साथी ॥
रूप विशाला है, सब से निराला है ॥,,
राजेंद्र छवि प्यारी रे,,, त्रिपुरारी,
दूल्हा बन आए,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/24365/title/dulha-ban-aaye-tripurari-re

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |